उमरह
और
हज्ज
का आसान क्रमबद्ध तरीका

उमरह और हज्ज के आमाल तरतीब के मुताबिक़

मुरत्तिब

मुफ्ती असरारुल हक़ हथोड़वी

मद्रसह फैज़े उस्मानी व्यारा, तापी, गुजरात

بسم الله الرحمن الرحيم

आसान उमरह (क्रमबद्ध)

मीक़ात से गुज़रने से पेहले चार काम करें

[1] मीक़ात से पेहले ऐहराम की चादरें पहेन कर (अगर मकरूह वक़्त न हो तो) ऐहराम की दो रकआत नफ़्ल नमाज़ पढ़ें।

[2] फिर उमरह की निय्यत कर के तीन बार पूरा लब्बैक पढ़ें।

(उमरह की निय्यत : **ऐ अल्लाह ! मैं उमरह की निय्यत करता हूं, इसे आप मेरे लिये आसान फरमा दीजिये ओर क़बूल फरमा लीजिये**)

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ ، لَا شَرِيْكَ لَكَ .

(लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल् ह़म्द वन्निअमत लक वल् मुल्क, ला शरीक लक)

[3] अब आप ऐहराम मे दाख़िल हो गए इस लिये तमाम गुनाहों से ओर उन तमाम कामों से बचें जो ऐहराम की हालत मे मना हे।

[4] अब मर्द हज़रात ऊँची आवाज़ से ओर ख़वातीन आहिस्ता आवाज़ से मस्जिदे ह़राम पहुंचने तक जितना हो सके बार बार पूरा लब्बैक पढ़ते रहें।

तवाफ़ शुरू करने से पेहले चार काम करें

[5] हजरे अस्वद के बिलकुल सामने आने से पेहले बैतुल्लाह की तरफ रुख़ कर के इस तरह खड़े हो जाऐं के ह़जरे अस्वद थोड़ा सा आप की दाहनी तरफ हो; ओर अब लब्बैक पढ़ना बंद कर दें।

[6] मर्द हज़रात इज़तिबाअ कर लें - यअनी अपनी चादर के ऐक किनारे को दाऐं हाथ की बग़ल से निकाल कर बाऐं हाथ के कंधे पर डाल दें, ओर दाऐं कंधे को खुला छोड़ दें - ओर तवाफ़ करने की निय्यत कर लें।

(तवाफ़ की निय्यत : **ऐ अल्लाह ! मैं आप के मुक़द्दस घर के तवाफ की निय्यत करता हूं, इसे आप मेरे लिये आसान फरमा दीजिये ओर क़बूल फरमा लीजिये**)

[7] फिर ऐक क़दम दाहनी तरफ हट कर इस्तिक़्बाले ह़जर करें यअनी ह़जरे अस्वद के बिलकुल सामने आ जाऐं ओर दोनों हाथ मर्द कानों तक ओर ख़वातीन सीने तक उठा कर ये कलिमात पढ़ें :-

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ، وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ، وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ، اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ ، وَتَصْدِيْقًا

بِكِتَابِكَ ، وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ ، وَاتِّبَاعًا لِسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ ، صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ .

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर, व ला इलाह इल्लल्लाह, व लिल्लाहिल् ह़म्द, वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाह । अल्लाहुम्म ईमानम् बिक, व तस्दीक़म् बिकिताबिक, व वफाअम् बिअह्दिक, वत्तिबाअन् लिसुन्नति नबिय्यिक मुह़म्मदिन् स़ल्लल्लाहु अलय्हि व सल्लम।

[8] फिर हाथों को नीचे कर दें ओर इस्तिलाम करें - इस्तिलाम का तरीक़ा ये हे के अपनी दोनों हथेलियाँ ह़जरे अस्वद पर रख्खें ओर मुंह हथेलियों के बीच रख कर हजरे अस्वद का बोसा लें; या फिर दूर ही से हथेलियों से ह़जरे अस्वद की तरफ इशारह करें (गोया ह़जरे अस्वद पर हाथ रख दिये हें) ओर हथेलियों को चूम लें - इस्तिलाम के वक़्त ये पढ़ें :-

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ، وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ .

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर, व ला इलाह इल्लल्लाह, वल्ह़म्दु लिल्लाह, वस्स़लातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाह।

तवाफ़ के दरमियान चार काम करें

[9] तवाफ़ करते हुवे बैतुल्लाह की तरफ न तो रुख़ करें ओर न ही पुश्त करें ओर न बैतुल्लाह को देखे; बल्कि मुनासिब नीची निगाहों से तवाफ करें; ओर ये कलिमात पढ़ते रहें :-

سُبْحَانَ اللّٰهِ ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ ، وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ .

सुब्हानल्लाहि, वल् ह़म्दु लिल्लाह; व ला इलाह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर; व ला ह़ौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह।

[10] मर्द हज़रात तवाफ़ के सिर्फ पेहले तीन चक्करों मे रमल करें यअनी सीना तान कर कंधे हिलाते हुवे छोटे छोटे क़दमों से चलें।

[11] तवाफ़ के हर चक्कर मे रुक्ने यमानी से हजरे अस्वद के दरमियान ये दुआ मांगे :-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ، رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ، وَفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً ، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ، وَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَبْرَارِ ، يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ ، يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ .

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् अफ्व, वल् आफियह, फिद् दुन्या वल् आख़िरह । रब्बना आतिना फिद् दुन्या ह़सनह, व फिल् आख़िरति ह़सनह, व क़िना अज़ाबन्नार, व अद्ख़िल्नल् जन्नत मअल् अबरार; या अज़ीज़ु ! या ग़फ्फारु ! या रब्बल् आलमीन !।

[12] हर चक्कर के शुरू मे ह़जरे अस्वद के बिल्कुल सामने खड़े हो कर इस्तिलाम करें; ओर ये

कलिमात पढ़ें :-

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ . وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ . وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ . وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ.

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर, व ला इलाह इल्लल्लाह, वल्हम्दु लिल्लाह, वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाह।

तवाफ़ के सात चक्करों के बाद चार काम करें

[13] सात चक्कर मुकम्मल कर लेने के बाद एक बार फिर हजरे अस्वद का इस्तिलाम करें; ओर मुल्तज़म पर जा कर ख़ूब दुआऐं मांगे।

(आजकल मुल्तज़म पर खुश्बू लगी हुई होती हे इस लिये ऐहराम की हालत मे उसे छूना नहीं चाहिये)

[14] फिर दाहना कंधा चादर से ढांक लें ओर मक़ामे इब्राहीम के पास, या जहां कहीं भी जगह मिल जाऐ तवाफ़ की दो रकआत वाजिब नमाज़ पढ़ कर दुआऐं मांगे।

(अगर मकरूह वक़्त हो तो ये दो रकआत अभी न पढ़ें; बल्कि मकरूह वक़्त निकल जाने के बाद पढ़ें)

[15] फिर ख़ूब ज़मज़म पीऐं ओर ये दुआ मांगे :-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا . وَرِزْقًا وَّاسِعًا . وَشِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक इल्मन् नाफिआ, व रिज़्क़व् वासिआ, व शिफाअम् मिन् कुल्लि दाअ।

[16] सई के लिये जाने से पेहले ऐक बार फिर हजरे अस्वद का इस्तिलाम करें।

सफ़ा मरवह की सई के लिये चार काम करें

[17] बाबे सफा से या जहां से सहूलत हो मस्जिद से बाहर निकल कर सफा की तरफ आऐं ओर ये कलिमात :-

اَبْدَاُ بِمَا بَدَاَ اللّٰهُ بِهٖ . اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ.

अब्दउ बिमा बदअल्लाहु बिही, इन्नस्सफा वल्मर्वत मिन् शआइरिल्लाह।

पढ़ते हुवे इतना चढ़ें जहां से बैतुल्लाह नज़र आ सकता हो; यहां बैतुल्लाह की तरफ रुख़ कर के दुआ की तरह हाथ उठा कर अल्लाहु अकबर कहें, कलिमऐ तैय्यिबह पढ़ें ओर देर तक दुआऐं मांगे।

[18] फिर सई करने की निय्यत करें ओर मरवह की तरफ जाऐं; ये एक चक्कर मुकम्मल हुवा, फिर मरवह से सफा की तरफ आऐं; ये दूसरा चक्कर मुकम्मल हुवा।

(सफा से मरवह तक ऐक चक्कर शुमार होगा ओर मरवह से सफा तक दूसरा चक्कर शुमार होगा, इस तरह सात चक्कर लगाऐं; सातवां चक्कर मरवह पर पूरा होगा।)

[19] सई के दरमियान ये दुआ मांगते रहें :-

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ ، وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمْ ، إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ.

रब्बिग़्फ़िर् वर्हम, व तजावज़् अम्मा तअलम, इन्नक अन्तल् अअज़्ज़ुल् अकरम ।

[20] मर्द हज़रात सई के दरमियान हर चक्कर मे हरी लाइट के नीचे थोड़ा तेज़ क़दमों से चलें।

सई के बाद दो काम करें

[21] अगर चाहें तो मस्जिदे ह़राम मे जा कर दो रकआत नफ़्ल नमाज़ अदा करें।

[22] अपने सर के बाल कटवा लें या मुंडवा लें ओर ख़वातीन उंग्ली के ऐक पोर के बराबर बाल कटवा लें।

अल्ह़म्दु लिल्लाह उमरह मुकम्मल हुवा

आसान ह़ज (क्रमबद्ध)

8 ज़िल ह़िज्जह को चार काम करें

[1] ह़रम की ह़द मे ऐह़राम की चादरें पहेन कर ह़ज की निय्यत कर के पूरा लब्बैक पढ़ें; ये अमल अगर मस्जिदे ह़राम मे कर लें तो मुस्तह़ब हे।

[2] तुलूए आफताब के बाद मीना जाऐं।

(किसी मजबूरी की वजह से तुलूऐ आफताब से पेहले रात ही मे जाना पड़े तो भी जा सकते हें)

[3] मीना मे ज़ुहर, असर, मग़रिब, इशा ओर 9 ज़िल ह़िज्जह की फज्र पढ़ें।

[4] मीना मे रेहते हुवे लब्बैक, तिलावत, ज़िक्र, दुआ ओर इस्तिग़फ़ार का एहतिमाम करें।

9 ज़िल ह़िज्जह को चार काम करें

[5] मीना मे फज्र की नमाज़ पढ़ कर तुलूऐ आफताब के बाद अरफात के मैदान मे जाऐं।

(किसी मजबूरी की वजह से तुलूऐ आफताब से पेहले रात ही मे जाना पड़े तो भी जा सकते हें)

[6] अरफात के मैदान मे ज़वाल से ग़ुरूबे आफताब तक अपनी हिम्मत के मुताबिक़ धूप मे खड़े हो कर दुआ ओर इबादत मे मश्ग़ूल रहें।

- वुक़ूफे अरफह का वक़्त ज़वाल से सुबहे सादिक़ तक हे।
- ग़ुरूबे आफताब से पेहले अरफात से न निकलें।

[7] ग़ुरूबे आफताब के फौरन बाद मग़रिब की नमाज़ पढ़े बग़ैर अरफात से मुज़्दलिफह जाऐं;

मुज़्दलिफह पहुंच कर इशा के वक़्त मे मग़रिब ओर इशा की फर्ज़ नमाज़ें ऐक साथ पढ़ें; (चाहे अकेले पढ़ रहे हों चाहे जमाअत के साथ) जमाअत के साथ पढ़ें तो ऐक अज़ान ओर ऐक इक़ामत के साथ पढ़ें; दोनों फर्ज़ नमाज़ों के बाद पेहले मग़रिब की सुन्नतें ओर फिर इशा की सुन्नतें ओर वित्र पढ़ें।

[8] मुज़्दलिफह से चने या खजूर की गुठलियों के बराबर 70 कंकरियां ले लें।

10 ज़िल हिज्जह को चार काम करें

[9] फज्र की नमाज़ के बाद वुक़ूफे मुज़्दलिफह करें यअनी मुज़्दलिफह मे ठेहरें।

- वुक़ूफे मुज़दलिफह का वक़्त सुबहे सादिक से तुलूऐ आफताब तक हे।

[10] वुक़ूफे मुज़्दलिफह के बाद मीना पहोंच कर ये तीन काम तरतीब के साथ करें;

(अ) सिर्फ बड़े जमरह को सात कंकरियां मारे, (पेहली कंकरी मारते ही लब्बैक पढ़ना बंद कर दें)

(ब) क़ुर्बानी करें,

(क) मर्द हज़रात अपने सर के बाल कटवा लें या मुंडवा लें ओर ख़वातीन अपने सर के बाल उंग्ली के एक पोर के बराबर कटवा लें।

[11] मक्कह जा कर तवाफे ज़ियारत करें; ओर तवाफ़ की दो रकआत पढ़ें।

[12] तवाफ़े ज़ियारत के बाद स़फा मरवह की सई करें।

11 ज़िल हिज्जह को चार काम करें

[13] ज़वाले आफताब के बाद सब से पेहले छोटे जमरे को सात कंकरियां मारें, फिर क़िब्ले की तरफ रुख़ कर के दुआऐं मांगे।

[14] फिर दरमियानी जमरे को सात कंकरियां मारें, फिर क़िब्ले की तरफ रुख़ कर के दुआऐं मांगे।

[15] फिर बड़े जमरे को सात कंकरियां मारें ओर दुआ मांगे बग़ैर अपने ख़ैमे पर चले जाऐं।

[16] अपने ख़ैमे मे ज़िक्र, तिलावत, दुआ ओर इस्तिग़फार का एहतिमाम करें।

12 ज़िल हिज्जह को चार काम करें

[17] ज़वाले आफताब के बाद सब से पेहले छोटे जमरे को सात कंकरियां मारें, फिर क़िब्ले की तरफ रुख़ कर के दुआऐं मांगे।

[18] फिर दरमियानी जमरे को सात कंकरियां मारें, फिर क़िब्ले की तरफ रुख़ कर के दुआऐं मांगे।

[19] फिर बड़े जमरे को सात कंकरियां मारें, ओर दुआ मांगे बग़ैर अपनी जगह पर चले जाऐं।

[20] अगर आज ही मीना से वापसी का इरादा हो तो बेहतर हे के रमी से फारिग़ हो कर ग़ुरूबे आफताब से पेहले ही मीना से रवाना हो जाऐं।

- अगर मीना मे रेहते हुवे 13 ज़िल्हिज्जह की सुबहे सादिक़ हो जाऐ तो अब 13 ज़िल्हिज्जह को भी तीनों जमरात की रमी करना जरूरी हे।
- वतन वापस होने का इरादा हो तो मक्कह छोड़ ने से पेहले तवाफे विदाअ भी कर लें यअनी बैतुल्लाह का तवाफ कर के दो रकआत पढ़ें; ये वाजिब हे। (हैज़ या निफास वाली औरत पर वाजिब नहीं)

अल्हम्दु लिल्लाह हज मुकम्मल हुवा

नोट : उमरह ओर हज का ये तरीका याद रखने की सहूलत को सामने रखते हुवे निहायत मुख़तसर, तरतीबवार ओर नंबरवार लिख्खा गया है; इस मे कुछ आमाल फ़र्ज़ भी हें, कुछ आमाल वाजिब भी हें, कुछ आमाल मस्नून ओर मुस्तहब भी हें; हज़ारों रूपिये खर्च कर के जाने वाले ह़ाजियों को चाहिये के ह़ज से मुतअल्लिक़ खूब मालूमात हासिल कर के ओर बार बार सीख कर जाऐं; ताके हमारा ये अज़ीम सफर हमारे लिये क़ीमती ओर नफा-बख़्श बने।

و لله الحمد و المنة، تمت بخير و عافية

1/ ज़ुल क़अदह/ 1440

तरतीब

मुफ्ती असरारुल हक़ हथोड़वी

मद्रसह फैज़े उष्मानी व्यारा, तापी

तस्दीक़

मुफ्ती अनस साहब फलाही

जामिअह दारुल एहसान, बारडोली, सूरत

नाशिर

मद्रसह फैज़े उष्मानी व्यारा, तापी, गुजरात

+91 95106 16326

Scan me !

FOR CONTACT

MADRASAH FAIZ E USMANI VYARA

Scan me !

FOR MORE BOOKS

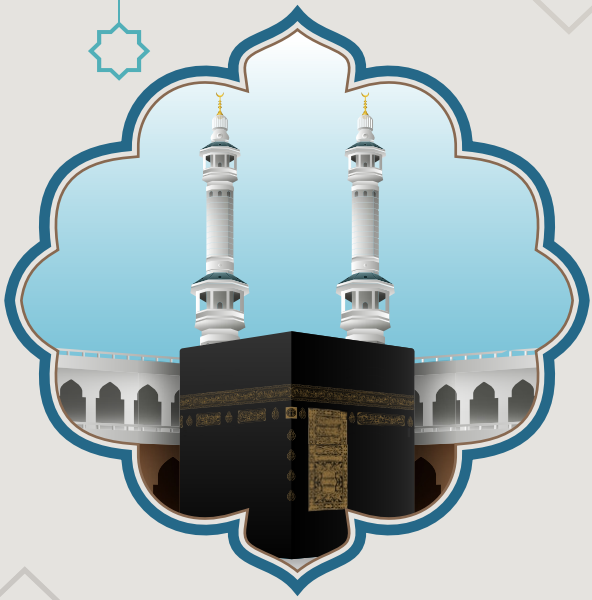

नाशिर

मद्रसह फैज़े उस्मानी व्यारा, तापी, गुजरात